International Journal of Web of Multidisciplinary Studies
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
website: *http://ijwos.com*
Vol.02 No.12.
OPEN ACCESS
E-ISSN : 3049-2424
DOI: https://doi.org/10.71366/ijwos

ग्राम पंचायतों में ई-शासन का बढ़ता प्रभाव: एक विश्लेषण

अमित कुमार[1]
[1] *एम.ए. (लोक प्रशासन), इग्नू, नई दिल्ली.*

Article Info

Article History:

Published:30 Dec 2025

Publication Issue:
Volume 2, Issue 12
December-2025

Page Number:
889-896

Corresponding Author:
अमित कुमार

Abstract:

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग आज के समय में शासन व्यवस्था के हर स्तर पर अभूतपूर्व बदलाव का कारण बन चुका है, और यह प्रभाव विशेष रूप से भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारत में जहां प्रशासनिक ढांचा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बंटा हुआ है, वहीं सूचना प्रौद्योगिकी के सही इस्तेमाल ने शासन की कार्यप्रणाली में गहरे और सकारात्मक परिवर्तन किए हैं। पंचायती राज संस्थाएँ, जिनमें ग्राम पंचायतें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, ग्रामीण प्रशासन के सबसे बुनियादी स्तंभ हैं। ग्राम पंचायतें न केवल सरकार और नागरिकों के बीच एक कड़ी का कार्य करती हैं, बल्कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में शासन के सबसे नजदीकी रूप के रूप में काम करती हैं। पहले ग्राम पंचायतों में प्रशासनिक कार्य कागजी रूप में होते थे, जिससे कार्यों में देरी, पारदर्शिता की कमी और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती थीं। यह प्रक्रिया नागरिकों के लिए समय–साध्य और कठिन होती थी, और प्रशासन की कार्यप्रणाली में जटिलताएँ होती थीं। हालांकि, डिजिटलीकरण और ई–शासन ने इन समस्याओं को जड़ से बदल दिया है। अब ग्राम पंचायतें अपने कार्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लेकर आई हैं, जिससे न केवल पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि सेवाओं की पहुंच और गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है।[1]

ई–शासन की मदद से, सरकारी योजनाओं का ट्रैकिंग, लाभार्थियों की जानकारी और भुगतान प्रक्रियाओं की निगरानी अब ऑनलाइन की जा सकती है। इससे सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि हुई है। नागरिक अब घर बैठे ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं, जिससे उन्हें सरकारी योजनाओं के लिए लंबी प्रक्रियाओं से गुजरने की आवश्यकता नहीं होती। इसके साथ–साथ, भ्रष्टाचार के अवसर भी कम हुए हैं, क्योंकि डिजिटल रिकॉर्ड्स और ट्रैकिंग सिस्टम से काम की स्थिति पर निगरानी रखना आसान हुआ है। इस डिजिटल परिवर्तन ने न केवल ग्राम पंचायतों के कार्यों को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाया है, बल्कि यह प्रशासन और नागरिकों के बीच एक सशक्त संवाद का निर्माण कर रहा है। पहले जहां प्रशासन और नागरिकों के बीच की खाई को पार करना मुश्किल था, अब ई–शासन की मदद से नागरिक अपने मुद्दों और जरूरतों को सीधे प्रशासन तक पहुँचाने में सक्षम हैं। यह नागरिकों के लिए सेवाओं की उपलब्धता को तेज और सुविधाजनक बनाता है, जिससे शासन की कार्यप्रणाली अधिक उत्तरदायी और जिम्मेदार बनती है। यदि इस डिजिटल रूपांतरण और ई–शासन की प्रक्रिया को और बढ़ावा दिया जाए, तो यह न केवल ग्राम पंचायतों को और अधिक सक्षम और दक्ष बनाएगा, बल्कि यह भारत के ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसके परिणामस्वरूप, न केवल प्रशासनिक सुधार होंगे, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास को भी गति देगा।[2]

Keywords: ग्राम पंचायत, ई–शासन, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी चुनौतियाँ, ग्रामीण विकास

ई–शासन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें शासन से संबंधित सभी गतिविधियाँ और सेवाएँ डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके, जैसे कि इंटरनेट, मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन पोर्टल्स, कंप्यूटराइज्ड रिकॉर्ड्स, और अन्य डिजिटल साधनों के माध्यम से प्रदान की जाती हैं। यह शासन प्रणाली के संचालन और नागरिकों तक पहुँचने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाती है। पहले, सरकारी कार्यों के संचालन में कागजी प्रक्रियाएँ, लंबी प्रतीक्षा अवधि, भ्रष्टाचार और जटिलता जैसी समस्याएँ प्रचलित थीं, जो प्रशासन की दक्षता को प्रभावित करती थीं। लेकिन ई–शासन के द्वारा, इन समस्याओं को कम किया गया है और शासन को अधिक पारदर्शी, समावेशी, और नागरिकों के लिए सुलभ बना दिया गया है। यह तकनीकी सुधार न केवल सरकारी कार्यों को गति देता है, बल्कि यह नागरिकों को भी सीधे तौर पर उनके अधिकारों और सेवाओं से जोड़ता है। ई–शासन का उद्देश्य शासन की कार्यप्रणाली को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना है, ताकि कार्यों की गुणवत्ता और नागरिकों की संतुष्टि में वृद्धि हो सके। इस प्रक्रिया का उद्देश्य नागरिकों को तेज,

Copyright © 2025 The Author(s) : This is an open access article under the CC BY license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)

सरल, पारदर्शी, और सुलभ सेवाएँ प्रदान करना है, जिससे वे किसी भी सरकारी सेवा को प्राप्त करने के लिए विभिन्न दफ्तरों और फाइलों की जटिलताओं से मुक्त हो सकें। ई–शासन के माध्यम से, सरकार सभी प्रकार की योजनाओं, सेवाओं, और आदेशों को ऑनलाइन उपलब्ध कराती है, जिससे समय की बचत होती है और प्रक्रिया में पारदर्शिता आती है।[3]

ई–शासन का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को तेज, सरल, और पारदर्शी सेवाएँ प्रदान करना है। पहले, सरकारी दफ्तरों में सेवाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए नागरिकों को लंबी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता था। वे घंटों इंतजार करते थे और कई बार उन्हें कागजी दस्तावेजों की कमी के कारण अपनी सेवा प्राप्त करने में समस्याएँ आती थीं। लेकिन अब, सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन पोर्टल्स और मोबाइल एप्लिकेशन्स के माध्यम से नागरिकों तक पहुँच रही हैं, जिससे समय की बचत होती है और सेवाएँ तुरंत उपलब्ध होती हैं। उदाहरण स्वरूप, अब लोग जन्म प्रमाणपत्र, राशन कार्ड, और अन्य जरूरी सरकारी दस्तावेज ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उन्हें कार्यालयों में जाने की आवश्यकता नहीं रहती। इस बदलाव ने न केवल सेवाओं की गति बढ़ाई है, बल्कि नागरिकों को अधिक पारदर्शिता के साथ सेवाएँ प्रदान की हैं। इसका मतलब यह है कि अब नागरिक अपनी किसी भी सरकारी सेवा की स्थिति को ऑनलाइन ट्रैक कर सकते हैं, और उन्हें पता चलता है कि उनकी आवेदन प्रक्रिया कहाँ तक पहुँची है।[4]

ई–शासन के द्वारा भ्रष्टाचार और मध्यस्थता की समस्या को प्रभावी रूप से कम किया गया है। पारंपरिक तरीके से, सरकारी कार्यों में बिचौलिए का अपनी सेवा प्राप्त करने के लिए पैसे मांगना, या प्रक्रियाओं को जानबूझकर धीमा करना आम बात थी। लेकिन डिजिटल प्रणाली में हर कार्य की रिकॉर्डिंग होती है और प्रत्येक क्रिया की ट्रैकिंग की जा सकती है। इससे कार्यों की पारदर्शिता बढ़ी है और गलत गतिविधियों की पहचान की जा सकती है। सरकार ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रत्येक नागरिक की जानकारी सुरक्षित रखी है, जिससे न केवल भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया जाता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित होता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही व्यक्ति तक पहुँचे। उदाहरण स्वरूप, कई राज्य सरकारों द्वारा चलाए गए 'डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर' स्कीम के माध्यम से, लाभार्थियों को सीधे उनके बैंक खातों में सहायता भेजी जाती है, जो भ्रष्टाचार को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके अलावा, ऑनलाइन पोर्टल्स पर लेन–देन का इतिहास मौजूद होने से किसी भी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना बेहद कम हो जाती है। ई–शासन के माध्यम से प्रशासन की दक्षता में बहुत सुधार हुआ है। पहले जहां सरकारी कार्य कागजी प्रक्रिया पर निर्भर होते थे, वहां अब कंप्यूटराइज्ड सिस्टम और डिजिटल रिकॉर्ड्स के माध्यम से, प्रशासनिक कार्यों में तेजी आई है। अब, सरकारी कार्यों की निगरानी, कर्मचारियों की उपस्थिति और योजनाओं की प्रगति को डिजिटल तरीके से ट्रैक किया जा सकता है। इससे कार्यों को जल्द निपटाया जाता है और किसी भी प्रकार की देरी को रोका जा सकता है। इस प्रणाली में, सब कुछ एकीकृत डेटाबेस में संग्रहीत होता है, जिससे समय पर फाइलें मिल जाती हैं और निर्णय लेने में कोई रुकावट नहीं आती। यह कार्यों की गति को भी बढ़ाता है और प्रशासन को अधिक गतिशील और उत्तरदायी बनाता है। इसके अलावा, प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण डेटा और रिपोर्ट्स भी डिजिटल रूप में उपलब्ध होती हैं, जिससे बेहतर योजना और रणनीतियाँ बनाई जा सकती हैं।[5]

ई–शासन से, नागरिकों और प्रशासन के बीच संपर्क अधिक सरल और पारदर्शी हो गया है। पहले, सरकारी दफ्तरों में अपनी शिकायतों या समस्याओं को दर्ज करने के लिए नागरिकों को घंटों खड़ा रहना पड़ता था। अब ई–शासन के द्वारा, नागरिक आसानी से ऑनलाइन शिकायतें दर्ज कर सकते हैं, और उनका समाधान भी जल्दी हो सकता है। इसके अलावा, प्रशासन द्वारा प्रत्येक शिकायत का रियल टाइम अपडेट भी नागरिक को मिलता है। इसके द्वारा, प्रशासन को भी यह समझ में आता है कि कौन से मुद्दे ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं और नागरिकों की क्या आवश्यकताएँ हैं। इससे प्रशासनिक सेवाओं की गुणवत्ता में भी सुधार होता है और नागरिकों का विश्वास प्रशासन पर बढ़ता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न राज्य सरकारें अब स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के माध्यम से ई–गवर्नेंस को बढ़ावा दे रही हैं, जिससे नागरिकों को उनकी रोजमर्रा की समस्याओं का समाधान सीधा और सरल तरीके से मिलता है। ई–शासन के माध्यम से, अब सरकारी कार्यों और दस्तावेजों को पूरी तरह से डिजिटल रूप में संग्रहीत किया जा सकता है। यह न केवल कागजी कार्यों की समस्याओं को हल करता है, बल्कि दस्तावेजों को ट्रैक करने और प्रबंधन करने में भी सुविधा होती है। डिजिटल दस्तावेजों की रिकॉर्डिंग से, समय की बचत होती है और नागरिक आसानी से अपनी जरूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह व्यवस्था पारदर्शिता, सुरक्षा, और संवेदनशीलता को भी बढ़ाती है, क्योंकि किसी भी दस्तावेज की लोकेशन और स्थिति को ट्रैक किया जा सकता है। इसके अलावा, यदि किसी दस्तावेज या योजना से संबंधित कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो डिजिटल रिकॉर्ड्स से तुरंत उसका समाधान ढूँढ़ा जा सकता है। यह सरकार को प्रभावी रूप से योजना बनाना और अपनी कार्य प्रणाली को सुधारने में मदद करता है। ई–शासन न केवल शासन की कार्यप्रणाली में सुधार लाने के लिए एक प्रभावी उपाय है, बल्कि यह नागरिकों को उनके अधिकारों और सेवाओं तक पहुंच प्रदान करने के लिए एक सशक्त माध्यम भी है। डिजिटलीकरण के माध्यम से प्रशासन को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिकों के प्रति समर्पित बनाया जा सकता है। इस प्रक्रिया से, न केवल सरकारी कार्यों में सुधार हुआ है, बल्कि नागरिकों के अधिकारों की प्राप्ति में भी वृद्धि हुई है। यदि इसे सही तरीके से लागू किया जाए, तो ई–शासन देश के समग्र प्रशासनिक सुधार और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।[6]

ई–शासन के माध्यम से ग्राम पंचायतों में पारदर्शिता और जवाबदेही में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। पारंपरिक कागजी कार्यों और धीमी प्रक्रियाओं के कारण ग्राम पंचायतों में पारदर्शिता की कमी होती थी, जिससे भ्रष्टाचार और योजनाओं के गलत क्रियान्वयन का खतरा बना रहता था। लेकिन अब डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से सभी कार्यों को ऑनलाइन किया जा रहा है, जिससे ग्राम पंचायतों में न केवल कार्यों की निगरानी करना आसान हुआ है, बल्कि इन कार्यों में पूरी पारदर्शिता सुनिश्चित की गई है। उदाहरण के लिए, पंचायतों के द्वारा किए गए कार्यों की पूरी सूची, कार्यों की लागत, कार्यों के लाभार्थी और भुगतान की स्थिति अब ऑनलाइन

पोर्टल्स पर उपलब्ध होती है। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी नागरिक आसानी से यह देख सके कि उनके गाँव में कौन से काम हो रहे हैं, उनकी लागत कितनी है और कौन से लाभार्थी उन कामों से लाभान्वित हो रहे हैं। इससे न केवल योजना की कार्यप्रणाली को समझने में मदद मिलती है, बल्कि यह सुनिश्चित किया जाता है कि कोई भी कार्य बिना किसी गड़बड़ी के सही तरीके से पूरा हो रहा है। इसके अलावा, डिजिटल माध्यमों के जरिए सामाजिक लेखा–जोखा भी उपलब्ध कराया जा रहा है। अब ग्राम पंचायतों के सभी कार्यों का पूरा लेखा–जोखा सार्वजनिक रूप से ऑनलाइन किया जा रहा है, जिससे नागरिक इन कार्यों को ट्रैक कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार या दुरुपयोग नहीं हो रहा है। इस प्रकार की पारदर्शिता ने सरकारी योजनाओं और कार्यों के क्रियान्वयन में लोगों का विश्वास बढ़ाया है और साथ ही भ्रष्टाचार के अवसरों को भी न्यूनतम किया है। इससे प्रशासनिक जवाबदेही भी बढ़ी है, क्योंकि अब ग्राम पंचायतों के अधिकारियों को अपने कार्यों के लिए सीधे नागरिकों के सामने जवाब देना पड़ता है। यदि कोई योजना सही तरीके से नहीं चल रही होती, तो उसे डिजिटल निगरानी तंत्र के माध्यम से आसानी से पहचाना जा सकता है और संबंधित अधिकारी को जवाबदेह ठहराया जा सकता है।[7]

ई–शासन के तहत ग्राम पंचायतों के कार्यों में डिजिटल निगरानी और सामाजिक लेखा–जोखा का सिस्टम स्थापित किया गया है। अब, हर योजना और कार्य की स्थिति, लाभार्थियों की जानकारी और भुगतान की प्रक्रिया को ट्रैक करना बेहद आसान हो गया है। उदाहरण के तौर पर, मनरेगा प्रधानमंत्री आवास योजना और स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं की प्रगति को डिजिटल माध्यम से ट्रैक किया जा सकता है। इन योजनाओं की कार्यान्वयन प्रक्रिया को ऑनलाइन अपडेट किया जाता है, जिसमें जॉब कार्ड्स की स्थिति, लाभार्थियों के नाम, काम की प्रगति, और भुगतान की ट्रैकिंग जैसी जानकारी शामिल होती है। इससे योजनाओं के दुरुपयोग या अनियमितताओं का पता लगाना आसान हो गया है। इसके साथ ही, डिजिटल निगरानी तंत्र ने सरकारी योजनाओं के सही लाभार्थियों तक पहुंच सुनिश्चित करने में भी मदद की है।[8] अब यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि योजनाओं का लाभ सही व्यक्ति तक पहुँच रहा है, जिससे योजनाओं का उद्देश्य पूरा होता है और समाज के विभिन्न वर्गों को लाभ मिलता है। यदि कोई गलती या अनियमितता पाई जाती है, तो उसे जल्दी से ठीक किया जा सकता है। इससे न केवल सरकारी कार्यों की गुणवत्ता बेहतर हुई है, बल्कि यह नागरिकों के बीच सरकारी संस्थाओं के प्रति विश्वास भी बढ़ा है। इस डिजिटल निगरानी और पारदर्शिता से ग्राम पंचायतों की जवाबदेही को भी मजबूती मिली है, जिससे नागरिकों को उनके अधिकारों का पूरा लाभ मिल रहा है और प्रशासन को अपने कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायी बनाया जा रहा है। ई–शासन के प्रभाव से ग्राम पंचायतों के कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही की जो क्रांति आई है, उसने न केवल प्रशासनिक कार्यों को तेज और सरल बनाया है, बल्कि सरकार और नागरिकों के बीच के संवाद और विश्वास को भी मजबूत किया है। ग्राम पंचायतों में डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से अब हर कार्य की निगरानी की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि हर कार्य सही तरीके से और पारदर्शिता के साथ किया जाए। इससे सरकारी योजनाओं का सही लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचने लगा है, और नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूकता और भरोसा भी हुआ है। इस प्रकार, ई–शासन ने ग्राम पंचायतों को अधिक प्रभावी, जवाबदेह और पारदर्शी बना दिया है।[9]

ग्राम पंचायतों में ई–शासन के माध्यम से सरकारी सेवाओं की प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जिनकी वजह से ग्रामीण नागरिकों को सेवाओं तक पहुंचने में अधिक सुगमता और तेजी मिली है। पहले के समय में, जब सरकारी सेवाओं का लाभ प्राप्त करना था, तो नागरिकों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता था, जैसे लंबी कतारों में खड़ा होना, घंटों तक इंतजार करना, दस्तावेजों की जांच और प्रक्रिया में होने वाली देरी, आदि। विशेषकर, ग्रामीण क्षेत्रों में जहां मूलभूत सुविधाओं की कमी और दूरियां अधिक होती थीं, इन समस्याओं का समाधान एक बड़ा चुनौती बन चुका था। प्रशासनिक प्रक्रिया की यह धीमी गति और जटिलताएँ आम जनता के लिए अत्यधिक परेशानियों का कारण थीं। ई–शासन की अवधारणा ने इस पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया है।[10] ई–ग्राम स्वराज पोर्टल जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म ने अब पंचायतों के लिए सेवाओं की निगरानी, योजना के कार्यान्वयन, और अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं को आसान बना दिया है। अब, ग्राम पंचायतें किसी भी योजना, परियोजना या सरकारी कार्य का विवरण, उसकी प्रगति, और बजट का रिकॉर्ड आसानी से ऑनलाइन अपडेट करती हैं। इससे जनता के पास किसी भी योजना की विस्तृत जानकारी होती है और वे यह जान सकते हैं कि कौन सी योजना उनके क्षेत्र में लागू हो रही है और उसका क्या परिणाम हो रहा है। इसके अलावा, अब ग्राम पंचायत विकास योजना को भी ऑनलाइन किया गया है, जिससे योजनाओं का निर्माण और कार्यान्वयन ज्यादा सुव्यवस्थित हो गया है। अब स्थानीय लोग अपने फोन या कंप्यूटर के माध्यम से विकास योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और किसी भी योजना से संबंधित शिकायतों को प्रशासन तक आसानी से पहुँचा सकते हैं। यह प्रणाली प्रशासन की जवाबदेही को भी बढ़ाती है क्योंकि योजनाओं के सभी विवरण ऑनलाइन होते हैं, और इनकी निगरानी कोई भी नागरिक कर सकता है।[11]

डिजिटल जन्म–मृत्यु प्रमाण पत्र और पेंशन आवेदन जैसी बुनियादी सेवाओं के लिए अब नागरिकों को ग्राम पंचायतों के कार्यालयों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है। पहले, इन प्रमाण पत्रों के लिए लंबी प्रक्रिया और कई दस्तावेजों की आवश्यकता होती थी, लेकिन अब यह पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन हो गई है। लोग घर बैठे आवेदन कर सकते हैं, और उनके प्रमाण पत्र आसानी से डाउनलोड किए जा सकते हैं। इससे ना सिर्फ समय की बचत होती है, बल्कि प्रक्रिया भी पारदर्शी और आसान हो जाती है। मनरेगा के माध्यम से, अब सभी कार्यों की प्रगति को डिजिटल रूप में ट्रैक किया जा सकता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि काम समय पर पूरा हो, और भुगतान सही समय पर और सही व्यक्ति तक पहुंचे। पहले मनरेगा के तहत कामों की स्थिति की जानकारी केवल प्रशासनिक स्तर पर होती थी और नागरिकों को इनकी जानकारी के लिए काफी समय इंतजार करना पड़ता था। अब, इस

डिजिटल प्रणाली ने काम की पारदर्शिता बढ़ाई है, और साथ ही नागरिकों को उनकी मेहनत का सही मुआवजा मिलने की संभावना को मजबूत किया है।[12] ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया ने न सिर्फ नागरिकों के समय की बचत की है, बल्कि यह सरकारी कर्मचारियों को भी कार्यों को सुलभ और अधिक व्यवस्थित तरीके से करने में मदद कर रहा है। पहले, जहां कर्मचारियों को दस्तावेजों की भरमार और लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था, वहीं अब वे सब कुछ डिजिटल रूप से अपडेट कर सकते हैं और आवश्यकतानुसार आंकड़ों की जांच और पुनः प्राप्ति कर सकते हैं। यह प्रणाली न केवल तेज है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि कोई भी दस्तावेज या जानकारी खो न जाए, क्योंकि सभी डेटा इलेक्ट्रॉनिक रूप में सुरक्षित होते हैं। इसके अलावा, कामों की स्थिति और लाभार्थी जानकारी को ऑनलाइन ट्रैक किया जा सकता है, जिससे न सिर्फ कार्यों की प्रगति की जानकारी मिलती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित होता है कि लाभार्थियों तक सभी सेवाएं सही समय पर और सही तरीके से पहुंच रही हैं। उदाहरण स्वरूप, यदि कोई ग्रामीण लाभार्थी किसी योजना के तहत सहायता प्राप्त कर रहा है, तो उसे डिजिटल रूप से यह पता चलता है कि उसका आवेदन किस स्थिति में है, और भुगतान कब किया जाएगा। इससे न केवल योजना के तहत लाभार्थियों की संतुष्टि बढ़ती है, बल्कि प्रशासनिक पारदर्शिता भी मजबूत होती है।[13]

समय और लागत की बचत ने पूरे प्रणाली को अधिक कुशल और सुलभ बना दिया है। पहले, जहां किसी योजना या दस्तावेज के लिए नागरिकों को महीनों तक इंतजार करना पड़ता था, अब यह सारी प्रक्रिया कुछ ही मिनटों में पूरी हो जाती है। साथ ही, प्रशासनिक स्तर पर भी अब समय की बचत हो रही है, जिससे सरकारी कार्यों को तेजी से पूरा किया जा सकता है और अधिक कार्यकुशलता आती है। भ्रष्टाचार और मध्यस्थता को कम करने में भी डिजिटल प्रक्रिया मददगार साबित हो रही है। पहले, जब सभी कार्य कागजों और हाथ से किए जाते थे, तो भ्रष्टाचार के अवसर ज्यादा होते थे। कई बार अधिकारी जानबूझकर प्रक्रियाओं को लम्बा खींचते थे, या भ्रष्ट तरीके से योजनाओं का लाभ कुछ चुनिंदा व्यक्तियों तक सीमित कर दिया जाता था। लेकिन अब, जब सारी प्रक्रिया डिजिटल होती है, तो इसे ट्रैक किया जा सकता है, और कोई भी कार्य या लाभ गलत हाथों में जाने का खतरा कम हो जाता है। यह पारदर्शिता प्रशासन को जिम्मेदार बनाती है और किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी को रोकती है। कुल मिलाकर, ई–शासन ने ग्राम पंचायतों की सेवाओं को तेज, पारदर्शी और उत्तरदायी बना दिया है, और इससे सरकारी कार्यों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। ग्राम पंचायतों के डिजिटल परिवर्तन ने न केवल नागरिकों के लिए सेवाओं को अधिक सुलभ बना दिया है, बल्कि यह सुनिश्चित किया है कि वे सही समय पर और बिना किसी समस्या के अपनी सरकारी सेवाओं का लाभ उठा सकें।[14]

ई–शासन के अंतर्गत वित्तीय प्रबंधन को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय किए गए हैं। पीएफएमएस (लोक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली), डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) और ऑनलाइन ऑडिट तंत्र जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों ने ग्राम पंचायतों की वित्तीय कार्यप्रणाली को अधिक सुसंगत, सटीक और पारदर्शी बना दिया है। पहले, ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय प्रबंधन में बहुत सी समस्याएँ थीं जैसे कि फर्जी भुगतान, बजट का गलत इस्तेमाल, और विभिन्न योजनाओं के लिए धन का गलत तरीके से वितरण। इन समस्याओं का समाधान ई–शासन ने कुछ हद तक किया है। फर्जी भुगतान और घपलों में कमी पूर्व में, ग्राम पंचायतों में कामकाजी प्रक्रिया और वित्तीय लेन–देन मुख्यतः कागजों पर आधारित होते थे, जिसके कारण फर्जी भुगतान और भ्रष्टाचार के मामले बढ़ गए थे। किसी योजना के तहत लाभार्थियों को भुगतान करने में अक्सर धोखाधड़ी होती थी और कई बार लाभार्थी के नाम पर फर्जी तरीके से राशि प्राप्त कर ली जाती थी। लेकिन पीएफएमएस और डीबीटी जैसे ऑनलाइन प्लेटफार्मों की मदद से अब सभी वित्तीय लेन–देन ट्रैक किए जाते हैं। इससे कोई भी राशि सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में जमा होती है, और यह पूरी प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक रूप से नियंत्रित होती है। इसके द्वारा पारदर्शिता को बढ़ावा मिला है और किसी भी प्रकार के घपले–घोटाले की संभावना कम हो गई है।[15]

लाभार्थियों तक सहायता सीधे बैंक खातों में डीबीटी प्रणाली ने ग्राम पंचायतों में वित्तीय लेन–देन की प्रक्रिया को और भी सरल और प्रभावी बना दिया है। पहले, विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों तक सहायता पहुँचाने के लिए मध्यस्थों का सहारा लिया जाता था, जिससे प्रक्रिया में समय की देरी होती थी और कई बार भुगतान सही व्यक्ति तक नहीं पहुँच पाता था। अब क्ठज् प्रणाली के तहत, योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित किया जाता है। इससे न केवल पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि यह सुनिश्चित भी होता है कि योजना का लाभ वास्तविक और योग्य व्यक्ति तक पहुंचे। इसके अलावा, लाभार्थियों तक सहायता का सीधा पहुंचना न केवल लाभार्थियों को जल्दी लाभ देने में मदद करता है, बल्कि इसे सरकार और पंचायतों द्वारा निगरानी और जांच करना भी आसान बना देता है। कोई भी अधिकारी गलत तरीके से धन के वितरण में लापरवाही नहीं कर सकता, क्योंकि यह सभी प्रक्रिया डिजिटल रूप से ट्रैक और रिकॉर्ड होती है। इससे प्रशासन की जवाबदेही भी बढ़ी है।[16]

डिजिटल वाउचर और ई–बुककिपिंग के माध्यम से वित्तीय प्रणाली की पारदर्शिता में काफी वृद्धि हुई है। पहले के समय में, खर्चों का लेखा–जोखा मैन्युअल रूप से किया जाता था, जिससे कई बार आंकड़ों में गड़बड़ी हो जाती थी और उन पर निगरानी रखना मुश्किल हो जाता था। लेकिन अब, ई–बुककिपिंग और डिजिटल वाउचर के माध्यम से हर लेन–देन को आसानी से ट्रैक किया जा सकता है। हर एक खर्च और भुगतान का रिकॉर्ड डिजिटल रूप से सुरक्षित होता है, और यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी राशि बिना उचित अनुमति और निगरानी के खर्च न हो। इन डिजिटल टूल्स की मदद से, अब पंचायतों को अपनी वित्तीय स्थिति का सही मूल्यांकन करने और संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने में मदद मिलती है।[17] साथ ही, ऑनलाइन ऑडिट तंत्र ने भी वित्तीय निगरानी को मजबूत किया है। इसके द्वारा विभिन्न योजनाओं के लिए किए गए खर्चों की जांच–पड़ताल की जाती है, और यह सुनिश्चित किया जाता है कि खर्चों की कोई भी अनियमितता न हो। जब खर्चों का ऑडिट पारदर्शी तरीके से किया जाता

है, तो यह न केवल भ्रष्टाचार को रोकता है, बल्कि यह ग्रामीण प्रशासन में विश्वास भी पैदा करता है। इन सब सुधारों के माध्यम से, ग्राम पंचायतों में वित्तीय कार्यों में सुधार हुआ है, और डिजिटल वित्तीय प्रणाली ने भ्रष्टाचार और घपलों को कम किया है। अब, पंचायतों में किए गए हर कार्य और उनके लिए निर्धारित बजट की पूरी जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध होती है, जिससे पारदर्शिता, जवाबदेही और सटीकता सुनिश्चित होती है। डीबीटी, पीएफएमएस और ई–बुककिपिंग जैसे डिजिटल तंत्र न केवल सेवाओं को सुलभ बनाते हैं, बल्कि यह पंचायतों के वित्तीय प्रबंधन को दक्ष और प्रभावी बनाते हैं, जो ग्रामीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।[18]

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण, और स्वच्छ भारत मिशन – ग्रामीण जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं की प्रगति अब डिजिटल माध्यम से ट्रैक और मॉनिटर की जाती है। इन योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, आवास निर्माण और स्वच्छता को बढ़ावा देना है, लेकिन इन योजनाओं में कभी–कभी भ्रष्टाचार और अनियमितताएँ सामने आती रही हैं। डिजिटल निगरानी प्रणालियों का उपयोग करके इन योजनाओं की प्रगति की सटीक जानकारी अब वास्तविक समय में प्राप्त की जा सकती है, जिससे योजनाओं की पारदर्शिता बढ़ी है और भ्रष्टाचार की संभावनाएँ कम हुई हैं। मनरेगा योजना के अंतर्गत जॉब कार्ड को नियमित रूप से अपडेट किया जाता है, ताकि सभी लाभार्थियों का डेटा सही और अपडेटेड रहे। यह सुनिश्चित करता है कि केवल योग्य व्यक्ति ही काम प्राप्त कर रहे हैं और सभी लाभार्थियों को पारदर्शिता के साथ भुगतान मिल रहा है।[19] डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जॉब कार्ड का पूरा रिकॉर्ड उपलब्ध होता है, जिससे किसी भी फर्जी गतिविधि या डुप्लिकेट डेटा की संभावना समाप्त हो जाती है। इसके साथ ही, कार्यस्थलों पर हाजिरी की जियो–टैगिंग प्रक्रिया भी लागू की गई है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य स्थल निर्धारित स्थानों पर हो रहे हैं और इन स्थलों की भौतिक स्थिति की पुष्टि की जा रही है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि योजनाओं का लाभ वास्तविक और जरूरतमंद व्यक्तियों तक पहुँच रहा है। इसके अलावा, कार्यस्थलों की फोटो अपलोडिंग एक और महत्वपूर्ण कदम है, जिससे यह सत्यापित किया जाता है कि वास्तविक कार्य किया जा रहा है और वह मानक के अनुरूप है। फोटो अपलोडिंग से काम की गुणवत्ता और स्थिति की निगरानी की जाती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन हो रहा है। अंत में, भुगतान की ऑनलाइन ट्रैकिंग प्रणाली ने पूरे भुगतान प्रक्रिया को पारदर्शी बना दिया है। अब सभी भुगतान सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में किए जाते हैं और इन भुगतानों की निगरानी की जा सकती है, जिससे किसी भी प्रकार के फर्जी भुगतान या मध्यस्थता की संभावना समाप्त हो जाती है। इन डिजिटल उपायों के माध्यम से, योजनाओं की निगरानी प्रक्रिया पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी और पारदर्शी हो गई है। यह न केवल भ्रष्टाचार को कम करने में मदद कर रहा है, बल्कि सरकारी योजनाओं के सही क्रियान्वयन और लाभार्थियों तक पहुँचने के लिए एक मजबूत ढांचा भी प्रदान करता है।[20]

डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम और ऑनलाइन प्लेटफार्मों ने महिलाओं और युवाओं को पंचायत कार्यों में अधिक शामिल करने में अहम भूमिका निभाई है। ग्राम पंचायतों में महिला सशक्तिकरण और स्थानीय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई डिजिटल पहलें शुरू की गई हैं, जिन्होंने सामाजिक और आर्थिक सुधारों को गति दी है। पहले जहां महिलाओं और युवाओं के लिए पंचायतों में भागीदारी सीमित थी, अब डिजिटल प्लेटफार्मों ने उन्हें प्रशासनिक गतिविधियों और निर्णय–निर्माण प्रक्रियाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। स्वयं सहायता समूह जैसे संगठनों को डिजिटल टूल्स का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है, जिससे वे अपने समूह के रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से संभालने में सक्षम हो गए हैं। इससे न केवल उनके कार्यों में पारदर्शिता आई है, बल्कि उनके द्वारा किए जाने वाले वित्तीय लेन–देन, ऋण प्राप्ति, और अन्य आर्थिक गतिविधियाँ भी अधिक सुव्यवस्थित और नियंत्रित हो गई हैं। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिली है, और वे अब अपनी वित्तीय स्थिति को बेहतर ढंग से नियंत्रित करने में सक्षम हो रही हैं। इसके अलावा, महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं और सरकारी योजनाओं तक सीधी पहुँच प्राप्त हो रही है, जिससे उनकी आर्थिक सशक्तिकरण प्रक्रिया को तेजी से गति मिली है। अब महिलाएँ स्वयं बैंक खाते खोल सकती हैं, सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकती हैं, और अपने परिवारों की वित्तीय स्थिति को बेहतर बना सकती हैं। डिजिटल माध्यमों के माध्यम से, वे सीधे तौर पर सरकार से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठा सकती हैं, बिना किसी बिचौलिये के। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, और वे समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं।[21]

ग्रामीण युवाओं के लिए भी डिजिटल साक्षरता ने नए अवसर खोले हैं। वे न केवल डिजिटल तकनीकों में दक्ष हो रहे हैं, बल्कि उन्हें रोजगार, प्रशिक्षण, और स्वरोजगार के नए अवसर भी मिल रहे हैं। कई प्रशिक्षण कार्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध हैं, जो युवाओं को विभिन्न कौशल, जैसे कंप्यूटर प्रशिक्षण, डिजिटल विपणन, कृषि प्रौद्योगिकी, और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर रहे हैं। इस तरह से, यह डिजिटल परिवर्तन न केवल महिलाओं को सशक्त बना रहा है, बल्कि युवाओं को भी नए रोजगार और विकास के अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। ई–शासन के माध्यम से महिलाओं और युवाओं को पंचायतों में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिला है, जो न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए लाभकारी है, बल्कि यह सामाजिक ढाँचे में भी सकारात्मक बदलाव ला रहा है। डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से यह सशक्तिकरण और भागीदारी की प्रक्रिया निरंतर बढ़ती जा रही है, जिससे ग्रामीण समुदायों में सामाजिक और आर्थिक विकास की संभावनाएँ बढ़ी हैं।[22]

ग्राम पंचायतों में निर्णय–निर्माण प्रक्रिया को और अधिक सटीक, वैज्ञानिक और पारदर्शी बनाने के लिए डेटा–आधारित व्यवस्थाओं का उपयोग किया जा रहा है। अब, प्रशासनिक कार्यों में डेटा संग्रहण और विश्लेषण की क्षमता काफी बढ़ चुकी है, जिससे योजनाओं की प्रभावशीलता को बेहतर तरीके से मापा और लागू किया जा सकता है। पहले जहां पंचायतों में निर्णय लेने के लिए

पारंपरिक अनुभव और अनुमानों का सहारा लिया जाता था, वहीं अब डिजिटल प्लेटफार्मों और डेटा संग्रहण तकनीकों ने इस प्रक्रिया को अधिक डेटा–आधारित और विश्लेषणात्मक बना दिया है। जनसंख्या डेटा को संग्रहित और विश्लेषित करने से पंचायतों को यह समझने में मदद मिलती है कि किस क्षेत्र में कितनी आबादी निवास कर रही है, जिससे स्थानीय संसाधनों का उपयोग और वितरण अधिक सटीक हो सकता है। इस डेटा के माध्यम से, पंचायतें यह पता कर सकती हैं कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी सुविधाओं और रोजगार जैसी योजनाओं की आवश्यकता कहाँ अधिक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी गाँव में अधिक वृद्धजन या विशेष आवश्यकता वाले लोग रहते हैं, तो पंचायत उन क्षेत्रों में विशेष स्वास्थ्य सेवाओं या वृद्धावस्था पेंशन की योजनाओं को प्राथमिकता दे सकती है। संपत्ति कर रिकॉर्ड भी डिजिटल माध्यम से संग्रहीत किए जा रहे हैं, जिससे न केवल करों की सही गणना हो रही है, बल्कि इस प्रक्रिया से संपत्ति से संबंधित विवादों को भी कम किया जा रहा है। डिजिटल रिकॉर्ड्स से यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी संपत्तियाँ उचित रूप से पंजीकृत हैं और करों का भुगतान सही तरीके से हो रहा है। इससे पंचायतों की वित्तीय स्थिति में भी सुधार हो रहा है, और किसी प्रकार की अनियमितताएँ या गड़बड़ी को रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त, विकास योजनाओं की आवश्यकता–आकलन भी अब डिजिटल टूल्स के माध्यम से किया जा रहा है।[23] इससे यह सुनिश्चित हो पा रहा है कि विकास योजनाएँ वास्तविक जरूरतों के आधार पर बनाई जाएं, न कि केवल अनुमान या औपचारिकताओं पर। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क निर्माण, जल आपूर्ति, शिक्षा संस्थानों का निर्माण आदि जैसी योजनाओं के लिए, डेटा–आधारित विश्लेषण यह तय करने में मदद करता है कि कहाँ सबसे अधिक निवेश की आवश्यकता है। यह आंकड़े यह भी बताते हैं कि क्या योजनाएँ वास्तविक जरूरतों के अनुरूप हैं, और उनकी प्रगति को ट्रैक करने का तरीका क्या है। डिजिटल टूल्स जैसे जीआईएस, ऑनलाइन सर्वेक्षण और डेटा विश्लेषण प्लेटफार्मों के माध्यम से, यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी योजनाएँ सटीक, वैज्ञानिक और वास्तविक समय की जानकारी पर आधारित हों। इससे निर्णय–निर्माण प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और त्वरित हो रही है, जिससे जनता को भी यह विश्वास हो रहा है कि उनके लिए सही निर्णय लिए जा रहे हैं। ग्राम पंचायतों में डेटा–आधारित निर्णय–निर्माण से प्रशासन की कार्यप्रणाली में सुधार हो रहा है। यह प्रक्रिया न केवल योजनाओं के कार्यान्वयन में मदद करती है, बल्कि इसे बेहतर निगरानी और मूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करती है। इससे ग्राम पंचायतों का प्रशासन अधिक जिम्मेदार और पारदर्शी बन रहा है, और यह ग्रामीण विकास के लिए भी एक मजबूत आधार प्रदान कर रहा है।[24]

ई–शासन ने ग्राम पंचायतों में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, फिर भी इसके समक्ष कुछ गंभीर चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं का समाधान किए बिना, इसका प्रभावी कार्यान्वयन और व्यापकता संभव नहीं है। सबसे पहली चुनौती है ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और बिजली की कमी, क्योंकि इन दोनों सुविधाओं की स्थिरता के बिना ई–शासन का लाभ नहीं लिया जा सकता। भारत के कई ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट की गति धीमी होती है और बिजली की समस्या लगातार बनी रहती है, जिससे ग्राम पंचायतों के डिजिटल कार्य प्रभावित होते हैं। यदि इन क्षेत्रों में मजबूत इंटरनेट नेटवर्क और बिजली की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित नहीं की जाती, तो ग्राम पंचायतों के डिजिटल सेवाओं के संचालन में बाधाएँ आ सकती हैं। दूसरी बड़ी चुनौती डिजिटल साक्षरता का अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों और पंचायत कर्मचारियों के बीच डिजिटल साक्षरता की कमी पाई जाती है। अधिकांश लोग इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करने में सक्षम नहीं होते, जिसके कारण वे सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने में असमर्थ रहते हैं। इसके समाधान के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण नागरिक और पंचायत कर्मचारी डिजिटल उपकरणों का सही तरीके से इस्तेमाल कर सकें। तीसरी चुनौती तकनीकी कर्मचारियों की कमी है। ग्राम पंचायतों में डिजिटल प्लेटफार्मों के संचालन और रखरखाव के लिए सक्षम तकनीकी कर्मचारियों का अभाव है। कई बार बिना उचित तकनीकी सहायता के, सेवाओं का संचालन कठिन हो जाता है। इसलिए, पंचायतों में तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती और उनके निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। नई तकनीकों को अपनाने का डर भी एक बड़ी समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग नई तकनीकों के प्रति संकोच करते हैं और पारंपरिक तरीकों को ही अधिक सहज महसूस करते हैं। इस डर को दूर करने के लिए पंचायतों को जागरूकता अभियान चलाने होंगे, ताकि नागरिकों को डिजिटल सेवाओं के लाभ और उपयोग के तरीके समझाए जा सकें। अंत में, पोर्टल और सिस्टम के बार–बार डाउन होने की समस्या भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। जब सरकारी पोर्टल्स तकनीकी समस्याओं का सामना करते हैं, तो नागरिकों को सेवाएँ प्राप्त करने में कठिनाई होती है और प्रशासनिक कार्य प्रभावित होते हैं। इसके लिए तकनीकी समर्थन और पोर्टल्स की नियमित निगरानी सुनिश्चित करनी होगी। इन सभी चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है कि पंचायतों को प्रशिक्षण, इंटरनेट अवसंरचना और तकनीकी समर्थन पर विशेष ध्यान दिया जाए।[25]

ग्राम पंचायतों में ई–शासन का बढ़ता प्रभाव ग्रामीण प्रशासन को अधिक पारदर्शी, सक्षम और उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह डिजिटल परिवर्तन न केवल प्रशासनिक कार्यों को तेज और सुव्यवस्थित बनाता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में शासन की गुणवत्ता में भी सुधार कर रहा है। पहले जहां कागजी कामकाज, धीमी प्रक्रियाएँ और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ प्रशासनिक तंत्र को प्रभावित करती थीं, वहीं अब ई–शासन के माध्यम से यह सभी मुद्दे लगभग हल हो रहे हैं। डिजिटल प्लेटफार्मों और ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से ग्राम पंचायतें अब पारंपरिक तरीकों से कहीं अधिक तेजी से कार्य कर पा रही हैं, जिससे नागरिकों को समय पर और सटीक सेवाएँ मिल रही हैं। ई–शासन ने योजनाओं में पारदर्शिता बढ़ाई है, जिससे भ्रष्टाचार की संभावना कम हुई है और लोगों को यह विश्वास हुआ है कि उनकी समस्याओं का समाधान बिना किसी भेदभाव और देरी के किया जा रहा है। इसके अलावा, यह सरकारी सेवाओं को सुलभ और आसान बनाता है, जिससे नागरिकों को बिना किसी बिचौलिये के सीधे योजनाओं का लाभ मिल रहा है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ चुनौतियाँ जैसे इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और

तकनीकी कर्मचारियों की अपर्याप्तता अब भी मौजूद हैं, जिन्हें हल किए बिना ई–शासन का प्रभावी क्रियान्वयन संभव नहीं हो सकता। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार को डिजिटल अवसंरचना में सुधार और तकनीकी प्रशिक्षण पर जोर देना होगा, ताकि ई–शासन को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके और यह भारत के ग्रामीण विकास की रीढ़ बन सके।

संदर्भ :

1. गुप्ता, ए. – सोनी, एस., *भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आईसीटी अवसंरचनाः अंतर और समाधान,* ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, 2018, पृ. 58.
2. नीति आयोग, *भारत का डिजिटल परिवर्तनः शासन और समावेशन,* नई दिल्ली, 2020, पृ. 112.
3. आर्थिक और सांख्यिकी ब्यूरो, *भारत में ग्रामीण ई–गवर्नेंसः चुनौतियाँ और अवसर,* सांख्यिकी मंत्रालय, नई दिल्ली, 2019, पृ. 49.
4. विश्व बैंक, *डिजिटल विभाजन को पाटनाः ग्रामीण भारत में प्रौद्योगिकी की पहुँच,* विश्व बैंक प्रकाशन, वाशिंगटन डीसी, 2018, पृ. 130.
5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, *ग्रामीण विकास के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकीः एक वैश्विक दृष्टिकोण,* संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, न्यूयॉर्क, 2017, पृ. 85.
6. राव, के., *भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता,* भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान प्रेस, दिल्ली, 2017, पृ. 56.
7. शर्मा, आर. सिंह, एन., *भारत में ई–गवर्नेंस और ग्रामीण सशक्तिकरण,* अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रशासन पत्रिका, मुंबई, 2020, पृ. 115116.
8. गुप्ता, ए. सोनी, एस., *पूर्वोक्त,* पृ. 76.
9. कुमार, आर., *सामान्य सेवा केंद्रों की भूमिका डिजिटल विभाजन को पाटने में, डिजिटल गवर्नेंस जर्नल,* नई दिल्ली, 2019, पृ. 47.
10. दास, एम., *ई–गवर्नेंस और लिंगः ग्रामीण भारत में विभाजन को पाटना,* भारतीय सामाजिक विज्ञान पत्रिका, नई दिल्ली, 2021, पृ. 224.
11. वेंकटेश, ए., *भारत के गाँवों में ई–गवर्नेंसः संघर्ष और सफलताएँ,* ग्रामीण विकास अध्ययन, नई दिल्ली, 2020, पृ. 98–100.
12. सिंह, आर. जैन, पी., *भारत में ग्रामीण ई–गवर्नेंस के लिए तकनीकी बाधाएँ,* सार्वजनिक नीति समीक्षा, नई दिल्ली, 2017, पृ. 72.
13. राय, एस., *भारत में डिजिटल समावेशनः चुनौतियाँ और सुझाव,* इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली, 2020, पृ. 92.
14. दूरसंचार नियामक प्राधिकरण, *ग्रामीण भारत में दूरसंचार सेवाओं की स्थिति,* नई दिल्ली, 2019, पृ. 55.
15. भट, आर. देसाई, *एस., ग्रामीण भारत में डिजिटल विभाजनः कनेक्टिविटी की चुनौतियाँ,* प्रौद्योगिकी और विकास पत्रिका, नई दिल्ली, 2018, पृ. 148.
16. अग्रवाल, एस., *भारत में ई–गवर्नेंस अपनाने में बाधाएँः एक अध्ययन,* गवर्नेंस और विकास पत्रिका, नई दिल्ली, 2016, पृ. 98–99.
17. जैन, एन., *भारत में डिजिटल बाधाओं को पार करना,* ई–गवर्नेंस पर राष्ट्रीय नीति समीक्षा, नई दिल्ली, 2018, पृ. 65–66.
18. ग्रामीण विकास मंत्रालय, *डिजिटल कनेक्टिविटी और ग्रामीण भारतः एक अवलोकन,* भारत सरकार, नई दिल्ली, 2021, पृ. 104.
19. शुक्ला, पी., *ई–गवर्नेंस और ग्रामीण भारतः बिहार का एक केस अध्ययन,* विकास अध्ययन पत्रिका, नई दिल्ली, 2019, पृ. 212.
20. चौधरी, आर. गुप्ता, *एस., डिजिटल साक्षरता और ग्रामीण विकास में इसका योगदान,* सूचना प्रौद्योगिकी और विकास पत्रिका, नई दिल्ली, 2016, पृ. 35.
21. वेंकटेश, ए., पूर्वोक्त, पृ. 59–60.
22. विश्वनाथ, एस. सेन, डी., *ग्रामीण ई–गवर्नेंस में तकनीकी बाधाएँ,* भारतीय ग्रामीण विकास पत्रिका, नई दिल्ली, 2020, पृ. 136.
23. मिश्रा, पी., *भारत में डिजिटल गवर्नेंस को सुधारने के लिए नीति दृष्टिकोण,* भारतीय नीति समीक्षा, नई दिल्ली, 2018, पृ. 105.
24. सिंह, एम., *आधार–लिंक्ड सेवाएँ और ग्रामीण भारतः चुनौतियाँ और सफलता की कहानियाँ,* भारतीय सार्वजनिक प्रशासन पत्रिका, नई दिल्ली, 2019, पृ. 69.

25. शर्मा, आर. सिंह, एन., *भारत में ई–गवर्नेंस और ग्रामीण सशक्तिकरण,* अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रशासन पत्रिका, मुंबई, 2020, पृ. 89.